ISBN : 978-81951728-5-6

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री- अस्मिता का प्रश्न

डॉ० अनुपम मिश्र
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी
राजकीय महिला महाविद्यालय
छिबरामऊ, कन्नौज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कृष्णा सोबती हिन्दी की उन कथाकारों में हैं जिन्होंने स्त्री के व्यक्तित्व की लड़ाई लड़ी। कृष्णा सोबती का लेखन- जगत पूर्ववर्ती स्त्रीवादी लेखन से इस अर्थ में अलग था कि जहाँ पहले स्त्री को सहानुभूति और संवेदना की दृष्टि से देखकर साहित्य रचा गया वहीं सोबती ने स्त्री अस्मिता के प्रश्न को मन से उतार कर 'देह' पर केन्द्रित किया। सन 1967 में प्रकाशित उनके उपन्यास 'मित्रो मरजानी' में देह विमर्श के सच को बहुत बेबाकी से प्रश्नांकित किया गया है- 'बताओं श्री मैं क्या करूँ, मै अपनी उन इच्छाओं को जो मेरी देह में उठती हैं? तुम्हारी देह में उठने वाली इच्छाएं, इच्छाएं है और मेरी इच्छाएं मेरे लिए पाप है?"

महादेवी वर्मा वैसे तो 'श्रृंखला की कड़ियाँ' (1942) में स्त्रीवादी अस्मिता को मर्यादा के अंदर देखने का उपक्रम करती हैं।

ISBN : 978-81951728-5-6

यह स्त्रीवादी लेखन की प्रस्तावना है। किंतु महादेवी के लेखन में विद्रोही चेतना का अभाव है जिसकी पूर्ति कृष्णा सोबती अपने कथा साहित्य में करती है। कहना न होगा कि जैनेन्द्र, अज्ञेय तथा इलाचन्द्र जोशी ने स्त्री मन की गहराइयों में प्रवेश करके स्त्री अस्मिता को रेखांकित करने का प्रयास किया, किन्तु स्त्री की देह-यष्टि को जानने के लिए सोबती के उपन्यासों की जरूरत पाठक तथा समाज दोनों के लिए बनी हुई थी। महादेवी वर्मा अपने एक संस्मरण "बिन्दा" में स्त्री दुर्दशा का मार्मिक चित्रण करती हुई कहती है- "कई दिन तक बिन्दा के घर झॉक-झॉक कर जब मैने मॉ से उसके सशुराल से लौटने केसम्बन्ध में प्रश्न किया, तब पता चला कि वह तो अपनी आकाश-वासिनी अम्मा के पास चली गयी उस दिन से मै प्रायः चमकीले तारे के आसपास फैले छोटे तारों में बिन्दा को ढूँढती रहती पर इतनी दूर से पहचानना क्या सम्भव था?

तब से कितना समय बीत चुका है पर बिन्दा और उसकी नई अम्मा की कहानी शेष नहीं हुई । कभी हो सकेगी या नहीं इसे कौन बता सकता है?"

कृष्णा सोबती ने कथा साहित्य के अन्तर्गत कई उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी। उनकी कुछ कहानियों काफी लम्बी हैं, इसलिए विधागत परिधि के ढ़ांचे में ये नहीं आती। उन्हें लघु उपन्यास या लम्बी कहानियों कह सकते हैं जो नये कथा साहित्य को व्यापक फलक प्रदान करते है।

सोबती जी ने डार से बिछुड़ी (1958). मित्रो मरजानी (1967),

ISBN : 978-81951728-5-6

यारों के यार (1968). तिन पहाड़ (1968). सूरजमुखी अंधेरे के (1972), जिन्दगीनामा (1979). ऐ लड़की (1991). दिलो दानिश (1993). तथा समय सरगम (2000) नामक उपन्यासों की रचना की है। इन उपन्यासों के माध्यम से सोबती जी ने स्त्री अस्मिता के प्रश्न को समाज के समक्ष एक चुनौती के रूप में पेश किया है। वेबाक कथात्मक अभिव्यक्ति तथा सौष्ठवपूर्ण रचनात्मकता उनके कथा साहित्य की विशेषता है। उन्होंने हिन्दी की कथा भाषा को विलक्षण ताजगी दी है। उनके भाषा-संस्कार के घनत्व, जीवन्त प्रांजलता और सम्प्रेषण स्त्री की आंतरिक आकुलता को मुखरता प्रदान करते हैं। सोबती की नायिकाएं अपने प्रेम और शरीर की जरूरतों के प्रति किसी भी तरह के संकोच या अपराध में पड़ने वाली नहीं थी। आज तो यौन-जीवन के अनुभवों पर बहुत सी कहानियों उपन्यास लिखे जा रहे हैं, पर आज से कई दशक पहले इस तरह के जीवन दर्शन से गुजरना एक साहसी कदम माना जायेगा। उनका कथा साहित्य किस प्रकार स्त्री की कुंठा और दमित कामवासना को बेलौस अभिव्यक्ति दे सका-ये प्रश्न पुनर्मूल्यांकन की मांग करता हैं।

स्त्री- देह किस प्रकार अलग-अलग देशों में पुरूषों की कामुकता और तथाकथित वीरता का शिकार हुई हैं। भारतीय समाज के स्त्री- देह और स्त्री - मन क्या-क्या जुल्म सहते आये हैं, इन प्रश्नों का उत्तर सोबती जी के कथा साहित्य में किस प्रकार अनुत्तरित हुआ है- ये प्रश्न आज के बौद्धिक समाज से पुनर्विवेचन की मांग करता है।

'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में एक ऐसी लड़की रत्ती की

ISBN : 978-81951728-5-6

कहानी है जिसका बचपन में ही दामन चाक कर दिया गया और उसके तन-मन के इर्द-गिर्द कंटीली बाड़ खींच दी गई। अन्दर और बाहर का संघर्ष स्त्री के जीवन को किस तरह झकझोर कर रख देता है, यह आधुनिक मानोविज्ञान के लिए शोध का विषय बन जाता है। आदर्शवादी समाज की आकांक्षा करने वाला व्यक्ति-सत्य यथार्थवाद के दायरे में किस तरह पिस जाता है, इसका वर्णन कृष्णा जी ने अपने अन्य उपन्यासों में भी किया है।

'सूरजमुखी अंधेरे के' की नायिका रत्ती के बरक्श मित्रो मरजानी की नायिका सुमित्रवंती जिसे 'मित्रो' का जाता है का चरित्र अपने खिलंदड़े अंदाज एवं वेबाकी के कारण चर्चा का विषय बन जाता है जो अपनी देह की मांग को नैतिकता से जोड़कर नहीं देखती तथा रत्ती की तरह अपराधबोध से ग्रसित नहीं होती। मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार में रहकर अपनी जैविक जरूरत को जिस तरह मित्रो अभिव्यक्त करती है वह प्रकारान्तर से सम्प्रति नारी समाज की आवाज है। वह कहती है—"मित्रो! रानी फिकर तेरे बैरियों को जिस गढ़ने वाले ने तुझे गढ़ दुनिया का सुख लूटने भेजा है, वहीं वहाँ का वाली तेरी फिकर भी करेगा।" x x x x 'जिठानी, तुम्हारे देवर सा बकलोल कोई दूसरा न होगा। न सुख-दुख, न प्रीति-प्यार, न जलन प्यास..... बस आये दिन धौल धप्पा .....लानत मलानत ।"

शोध के शीर्षक से ही शोध का उद्देश्य प्रकट हो जाता हैं। भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही स्त्री की अपनी विशिष्ट स्थिति रही है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः" वाला उद्घोष अतिमानवीय रूप में तो नारियों

ISBN : 978-81951728-5-6

की अस्मिता स्वीकार करता है, लेकिन वास्तविक धरातल पर ऐसी बात नहीं है। वेदों में कुछ विदुषी महिलाओं का जिक है, संगम साहित्य (तमिल) में कई स्त्री कवयित्री हैं, जिन्होंने अन्य विषयों के अतिरिक्त स्त्रियों के अन्तर्जगत तथा वहिर्जगत के विविध पहलुओं को कविता का विषय बनाया है। बौद्ध साहित्य में 'थेरी गाथा के अन्तर्गत बौद्ध भिक्षुणियों ने अपने जीवन के मार्मिक प्रसंगों को वाणी दी हैं। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के साहित्य में मीराबाई समेत कई अन्य स्त्रियों अपनी अनुभूति को व्यक्त करती है। इसी तरह भक्ति आन्दोलन को आधार प्रदान करने वाले संतों में एक स्त्री कवि गोदा या अण्डान का नाम भी है, किन्तु जिसे हम स्त्री विमर्श या फेमिनिज्म कहते है-वह बीसवीं शताब्दी की विचारधारा है।

दलित, आदिवासी एवं अन्य विमर्शो की तरह नारीवादी विमर्श का यह मानना है कि केवल नारियों द्वारा रचा गया साहित्य ही स्त्री अस्मिता का दस्तावेज हैं क्योंकि पुरूषों द्वारा लिखा गया स्त्री विषयक साहित्य सहानुभूति में लिखा गया है। उसमें 'तदनुभूति नहीं है इसलिए स्त्री अस्मिता के अंधेरे-उजाले, आशा, प्रतीक्षा, विडम्बना, संत्रास, संघर्ष, शोषण, लैगिंक भेदभाव, करूणा, वात्सल्य को केवल स्त्रियों ही समझ सकती हैं ।

स्त्री-पुरुष सम्बंध को अंकित करना सब के वश की बात नहीं। मित्रो मरजानी' और यारों के यार में कृष्णा सोबती जी ने भाषा की नयी जमीन तलाश की vec 8 1 'बादलों के घेरे नामक कहानी में सोबती जी ने प्रेम के अद्भुत संसार को संजीदगी से उकेरा है।

ISBN : 978-81951728-5-6

'जिंदगीनामा' एक 'औपन्यासिक जीवन गाथा को रूपायितकरता है। इस उपन्यास में समाज शास्त्र, मनोविश्लेषण शास्त्र का मिश्रण सोबती जी के कथ्य और शिल्प को नयी ताजगी प्रदान करता है।

इस प्रकार कृष्णा सोबती जी ने देह की इच्छाओं और मन की गाँठों को नया रूपाकार दिया है। ये गांठें जितनी देह की हैं, उतनी आत्मा की भी हैं। उत्तर आधुनिकता की इस आंधी में (Me too) जैसे अभियान सोबती के लेखन जगत को प्रासंगिक बनाते हैं। समाज कितना भी बदल जाय पर व्यक्ति मन के विश्लेषण की मांग सदैव बनी रहेगी। प्रस्तुत शोध प्रस्ताव का उद्देश्य एक ऐसे पुनर्मूल्यांकन की मांग करता है जिसमें आधी आबादी के सपनों, आशाओं और आकांक्षाओं को मूर्त रूप दिया जा सके।

शोध परिकल्पना से आशय पूर्व-चिन्तन से है। टी०एस० इलियट ने परम्परा के सिद्धान्त में कहा है केवल अतीत ही वर्तमान को प्रभावित नहीं करता, वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।" इस दृष्टिकोण से यदि प्रस्तुत विषय का सर्वेक्षण किया जाय तो यह समझाना आसान हो जायेगा कि स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान माहदेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, चन्द्र किरण सोनरिक्सा आदि लेखिकाओं ने जो आवाज उठाई थी उसकी अनुगूंज आज बदल गयी हैं। इस तर्क से प्रत्येक युग में साहित्य के नये विकास-रूप उसके पूर्वरूपों के मूल्यांकन को प्रभावित करते हैं एवं पुनर्मूल्यांकन के लिए प्रेरित करते हैं। कृष्णा सोबती जी के कथा-जगत में स्त्री अस्मिता के जो स्वर हैं, वे उनके पूर्व के लेखिकाओं में नहीं vec 8 1 इसी विशिष्टता

ISBN : 978-81951728-5-6

की पहचान करना ही प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है।

शोध परिकल्पना का ज्ञान शोध समस्या के समाधान की दिशा में नया आयाम प्रदान करता vec 8 1 शोध प्रक्रिया में विश्वसनीय ज्ञान की प्राप्ति परिकल्पना का शक्तिशाली माध्यम है। परिकल्पना एक सुनिश्चित अनुमान या निष्कर्ष होता है जिसेअवलोकित तथ्यों तथा दिशाओं को स्पष्ट करने के लिए एवं अनुसंधान को निर्देशित करने के लिए बनाया जाता है।

शोध प्रविधि के अन्तर्गत "डायरी विधि के द्वारा पुस्तकालयों, शिक्षण संस्थानों द्वारा उपलब्ध सामग्री को डायरी में नोट कर शोध में उसका यथास्थान प्रयोग करना शोध की गुणवत्ता के लिए आवश्यक है। शोध प्रविधि की एक और विधि 'कार्ड विधि द्वारा पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों के केटलाग से मिलान कर सम्बंधित पुस्तकों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है तथा शोध को पारदर्शी एवं प्रामाणिक बनाने में इनका उपयोग किया जा सकता है। 'साक्षात्कार भी शोध प्रविधि का एक अंग है। शोध विषय तथा उसके प्रकरण से सम्बंधित विषयों के विद्वानों, लेखकों तथा साहित्यकारों से लिए गये साक्षात्कार शोध विषय को पुष्ट तथा सारगर्भित बनाते हैं। अतः एक शोधार्थी को शोध की विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग करके अपने शोध विषय को तात्विक, तर्कसंगत एवं मौलिक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मित्रो मरजानी उपन्यास से उद्धृत-कृष्णा सोबती।*

ISBN : 978-81951728-5-6

2. *अतीत के चलचित्र (रेखाचित्र)से उद्धृत-महादेवी वर्मा।*
3. *मित्रो मरजानी उपन्यास में (सुमित्रवंती-मित्रो संवाद)-कृष्णा सोबती।*
4. *मनु स्मृति-9.3।*
5. *परपरा का सिद्धान्त-टी0एस0इलियट। kruti dev*